International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

# मन्नू भंडारी के जीवन में पितृसत्तात्मक सोच का कच्चा चिट्ठा

**कुमारी सोनी**
**शिक्षिका, हिंदी विभाग**
**Address: khushikunj east of bijli colony 17 no.sohasarai nalanda**
**Email id: krisoni2409@gmail.com**

हमारी भारतीय समाज आज भी पितृसत्तात्मक तथा सामंती मूल्यों पर आधारित है। और इस पितृसत्तात्मक सोच का वास्तविक या नग्न रूप अधिकांशतः लेखिकाओं के आत्मकथाओं में देखने को मिलती है। इन लेखिकाओं के लेखन में जहां पुरुषवादी परंपरा और रूढ़िवादी मान्यताओं के प्रति आक्रोश गुस्सा तथा विवशता है , तो वहां उनके प्रति मूक या फिर खुला विद्रोह भी है। साथ ही एक नई मानवीय सामाजिक व्यवस्था के लिए आवाहन और तड़प भी दिखाई पड़ती है।

पूरे साहित्य विद्या में पितृसत्तात्मक सोच तथा सामंती मूल्यों का क्रूर तस्वीर जितना महिलाओं के आत्मकथाओं में देखने को मिलती है , उतना और कहीं नहीं। महिलाओं के आत्मकथा के माध्यम से के भीतर हो रहे व्यवहार से यह सच्चाई खुलकर सामने आती है, कि किस तरह लड़कियां बचपन सेही पुरुषवादी सोच के दबाव में पलती है। जैसे-जैसे वे लेखिका अपना बचपन , युवावस्था, वैवाहिक जीवन को परत-दर-परत लिखती जाती है , उनके जीवन को तरह-तरह से खुरचने वाले सामंती सोच और व्यवहार खुद-ब-खुद सामने खुलते चले जाते हैं। ऐसे में खुद को प्रगतिशील कहने वाले पतियों के प्रगतिशीलता को उनकी पत्नियों द्वारा लिखे गए आत्मकथा के माध्यम से सत्यता की कसौटी पर परखा जा सकता है।

ऐसे ही एक आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' जिसकी लेखिका है-मनु भंडारी जो सामंती सोचों से भरी पड़ी है। उनकी आत्मकथा में पुरुषवादी सोच के कई ऐसे उदाहरण सामने आते

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

हैं, जिनसे उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रभावित प्रभावित करने वाले परिवार के लोगों के सामंती संस्कारों का पोल खोलती है।

मनु भंडारी 1950-60 के दशक के ऐसी महिला कथाकार हैं , जो अपने लेखन में स्त्री के प्रति होने वाले दुर्व्यवहारों , अत्याचारोंतथा विशेषकर सामंती तथा पुरुषवादी समाज से मिलने वाली पडताड़नों की चर्चा बहुत बेवाकीपन की है। इनकी आत्मकथा- 'एक कहानी यह भी' मूलतः प्रतिष्ठित रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व के आपसी रिश्तो के इर्द-गिर्द लिखी गई है। हम यह कह सकते हैं कि इनकी ये आत्मकथा इनके स्वयं के शक्तिकरण का सफल प्रयोजन कर के रूप में देखा जा सकता है। इनकी आत्मकथा में पितृसत्तात्मक परंपरा को स्वीकार तथा अस्वीकार को लेकर भ्रामक-सी स्थिति बनी हुई है। स्वयं मनु भंडारी भी इस बात को स्वीकार करती हैं।

होश संभालने के बाद से ही जिन पिताजी से किसी ना किसी बात पर हमेशा टक्कर चलती रही, वे तो ना जाने कितने रूपों में मुझमें हैं। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपराओं और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का एहसास नहीं होता, कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाएबैठा रहता है। स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उस से मुक्त तो नहीं कर सकता।

भारतीय समाज में लिंग भेद को पुष्ट करने में रंगभेद ने भी अहम भूमिका निभाई है। गोरा रंग हमेशा से ही काले रंग पर हावी होने की कोशिश की है। मनु जी भी इस रंगभेद को देश से नहीं बचा पायी। चूंकि वो रंग से सांवली थी , तथा कमजोर और मरियल सी पर उनकी बड़ी बहन ठीक उनके विपरीत गोरी, स्वास्थ्य तथा सुंदर। इनके पिता जी जिनका गोरा रंग कमजोरी था, अक्सर ही मनु जी की तुलना उनकी बहन से करके उनकी उपेक्षा की जाती थी। इस कारण बचपन में ही अपने सांवले रंग के प्रति जो कुंठा मन में भरी वह आज भी इतनी प्रसिद्धि तथा उपलब्धि पाने के बाद भी उससे उबर ना पायी। यह सामंती सोच का एक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नया भयावह चेहरा नहीं तो और क्या है। मन्नू जी के जीवन में जिस तरह के उतार-चढ़ाव आए उसे देखकर तोयही लगता है , कि वे इस तरह के पुरुषवादी परंपराओं से खुद भी मुक्त नहीं हो सकी। इसका एक स्पष्ट उदाहरण है कि वह अपने पति 'राजेंद्र यादव' जो एक सफल एवं प्रगतिशील लेखक के रूप में हिंदी साहित्य में उपस्थित रहे हैं , उनके बेवफाई के कारण उनके द्वारा दिए गए मानसिक आघात को झेला। लेकिन फिर साहस कर उन्होंने राजेंद्र यादव को अपने घर से छोड़कर चले जाने को कहा जिससे राजेंद्र जी के अहं को बहुत ठेस लगी। जो किसी भी पुरुष को लग सकती है। क्योंकि पुरुषों को इस बात का कि वे अपनी पत्नियों को घर से निकाल बाहर करें। परंतु पत्नी द्वारा पति को बेघर करने की उस दौर की स्त्रियों के लिए यह पहली ही घटना रही होगी। लेकिन ना ही राजेंद्र जी और ना ही मनु जी अपने फैसले पर टिके रहे। राजेंद्र जी फिर लौटे पर मनु जी उनके लिए अभद्रता के साथ दरवाजा नहीं बंद कर सकी।

इस घटना में एक तरफ मनु जी का सामंती सोच केप्रति साहसी विद्रोह दिखता है तो दूसरी तरफ आर्थिक निर्भरता के बावजूद पारिवारिक तथा सामाजिक परंपरा को निभाने हेतु अपने घर को बचाए रखने का संस्कार। या यूं कह सकते हैं, कि वह खुद ही सामंती परंपराओं से गिरी हुई पाती है। इसका कारण यह है कि जिन्हें कहीं ना कहीं यह विश्वास था कि उनका समर्पण एक ना एक दिन राजेंद्र जी को अवश्य बदल देगा। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वह 35 साल तक ऐसे व्यक्ति को बर्दाश्त किए जो बेवफा , छुन्ना, अक्कड़ तथा दबंग था। जिसके कारण उन्होंने न सिर्फ मानसिक आघात से गुजरना पड़ा बल्कि उनकी कलम भी लंबे समय तक रुकी रही अपनी आत्मकथा में एक जगह वह लिखती है।

नहीं जानती इतना सब जानने , सोचने, संभालने के बावजूद मैं फिर जिस दिशा की ओर मुड़ चली थी उसे क्या कहूं ? अपनी मूर्खता या हमारी पीढ़ी की भारतीय पत्नी की नियति?गनीमत है कि हमसे बाद बाली कई पत्नियों ने संस्कारों का यह चोला उतार फेंका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

है। आर्थिक रूप से परतंत्र पत्नियों के लिए तो हर स्थिति में साथ रहना मजबूरी था। आज भी है... पर मेरी क्या मजबूरी थी?"

सामंती और पितृसत्तात्मक संस्कार, समाज की बनावट में बेहद महीन धागों की तरह गुथे हुए हैं। इनके खिलाफ बोलना जितना आसान है , उन्हें जीवन से निकालना उतना ही मुश्किल। मनु जी लिखती हैं।

"हमेशा लिक छोड़कर चलने की गुहार लगाने वाले सामंती संस्कारों की धज्जियां बिखेरने वाले राजेंद्र का पूरा व्यक्तित्व इन्हीं संस्कारों में इस कदर लिपटा पड़ा है , जिसने उन्हें इस परंपरागत धारणा से कभी मुक्त नहीं होने दिया कि परिवार में वर्चस्व और प्रभुत्व केवल उसी का हो सकता है जो परिवार का भरण-पोषण करें उसकी जिम्मेदारियाँ निभाए।"

आज भी शायद ही कोई पुरुष इस धारणा से मुक्त होगा। मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी 'मैं हमें घर-परिवार , पिता, पति के माध्यम से लड़कियों , महिलाओं को नियंत्रित करने वाले कई तरह के पितृसत्तात्मक और सामंती संस्कारों का बेहद बेबाक वर्णन मिलता है। खास तौर से यह आत्मकथा एक ऐसे व्यक्ति की प्रगतिशीलता को कटघरे में खड़ा करती है जो, सामाजिक व्यवहार में सामंती मूल्यों का विरोध करता था , खुद को स्त्रियों की आजादी का पक्षधर कहता था , लेकिन घर के अंदर एक पति के रूप में 'खाटी मर्द' की तरह व्यवहार करता है। यह आत्मकथा प्रगतिशीलता के मुखौटे के पीछे छिपे गहरे पितृसत्तात्मक व्यवहार और सामंती सोच का कच्चा चिट्ठा खुलती है।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1.आजकल (मासिक पत्रिका) ; संपादक-फरहत प्रवीण; प्रकाशन विभाग- नई दिल्ली ; जून 2019; पृष्ठ संख्या- 31

2. एक कहानी यह भी (आत्मकथा) ; लेखिका- मन्नू भंडारी ; प्रकाशक- राधाकृष्ण प्रकाशन ; प्रकाशन विभाग- नई दिल्ली 2008; पृष्ठ संख्या- 115

3. आजकल (मासिक पत्रिका); संपादक- फरहत प्रवीण; प्रकाशन विभाग- नई दिल्ली जून 2019; संख्या- 33